दक्षिण पश्चिम रेलवे
प्रधान कार्यालय, हुब्बल्लि

# अभिव्यक्ति

जून, 2025

अंक : 55

हुब्बल्लि नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 77वीं बैठक को संबोधित करते हुए श्री मुकुल सरन माथुर, महाप्रबंधक, दपरे, हुब्बल्लि

राजभाषा विभाग, प्रधान कार्यालय
दक्षिण पश्चिम रेलवे, हुब्बल्लि

दक्षिण पश्चिम रेलवे

महाप्रबंधक
दक्षिण पश्चिम रेलवे

# संदेश

दक्षिण पश्चिम रेलवे की ई-पत्रिका "अभिव्यक्ति" के 55 वें अंक के माध्यम से आप सभी को संबोधित करते हुए मुझे अपार प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है।

राजभाषा का कार्य संपूर्ण देश को एक भाषायी सूत्र में पिरोने का कार्य है। भारत सरकार इसके लिए अनेक प्रकार का प्रयास कर रही है। राजभाषा प्रेमियों को भी यथा संभव इस दिशा में सार्थक योगदान देते रहना चाहिए। भाषा के विकास तथा प्रचार-प्रसार में पत्रिकाओं की अहम भूमिका होती है। विभिन्न क्षेत्रों में हो रही प्रगति के प्रस्तुतीकरण का सशक्त माध्यम पत्रिकाएं होती हैं। इसी क्रम में "अभिव्यक्ति" का अनवरत प्रकाशन दर्शाता है कि यह रेलकर्मियों के सृजनात्मक गुणों की अभिव्यक्ति को मंच प्रदान करने के साथ-साथ अन्य कर्मियों तक इस प्रगति व सृजनात्मकता को पहुंचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है।

"अभिव्यक्ति" के इस नवीनतम अंक के सफल संपादन एवं प्रकाशन के लिए मैं रचनाकारों एवं पाठकों को हार्दिक शुभकामनाएँ देता हूँ। मुझे विश्वास है कि गृह-पत्रिका "अभिव्यक्ति" अपने उद्देश्यों को पूरा करने में सदैव सफल रहेगी।

सादर,

आपका

(मुकुल सरन माथुर)
महाप्रबंधक

हुब्बल्लि

## दक्षिण पश्चिम रेलवे

मुख्य राजभाषा अधिकारी एवं
प्रधान मुख्य सिगनल एवं दूरसंचार इंजीनियर
दक्षिण पश्चिम रेलवे

# संदेश

दक्षिण पश्चिम रेलवे के राजभाषा विभाग द्वारा त्रैमासिक पत्रिका “अभिव्यक्ति” का नियमित प्रकाशन किया जा रहा है। और इस यात्रा में गृह-पत्रिका “अभिव्यक्ति” के 55 वें अंक का प्रकाशन अत्यंत हर्ष का विषय है।

राजभाषा के रूप में हिंदी की यात्रा संवैधानिक दायित्व के रूप में प्रारंभ हुई थी, परंतु आज हिंदी संपर्क, एकता तथा संस्कृति को प्रतिबिंबित करने का सशक्त माध्यम बन चुकी है। इसके प्रचार-प्रसार में हिंदी पत्रिकाओं का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। हिंदी पत्रिकाएं जहां अधिकारियों एवं कर्मचारियों को सृजनात्मक वातावरण उपलब्ध कराती हैं, वहीं भाषा और साहित्य के संवर्धन में भी सहयोग करती हैं। रेलकर्मियों में लेखन के प्रति रुचि उत्पन्न करने में पत्रिकाएं उत्प्रेरक का कार्य करती हैं। इससे न केवल उनकी रचनात्मक प्रतिभा और कौशल में निखार आता है, बल्कि उनकी भाषा भी समृद्ध होती है।

गृह पत्रिका “अभिव्यक्ति” का यह सदैव ही प्रयास रहा है कि प्रत्येक अंक नए कलेवर के साथ आप सभी पाठकों की अपेक्षाओं के अनुरूप प्रस्तुत किया जाए। इसके लिए आप सभी का सहयोग मिलता रहा है तथा आगे भी अपेक्षित है।

मैं पूर्णत: आश्वस्त हूं कि गृह-पत्रिका “अभिव्यक्ति” अपने उद्देश्यों को प्राप्त करने में निरंतर सफलता के नए अध्याय लिखेगी। “अभिव्यक्ति” पत्रिका के अनवरत प्रकाशन के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।

आपका

(शोभना गुप्ता)
मुख्य राजभाषा अधिकारी एवं
प्रधान मुख्य सिगनल एवं दूरसंचार इंजीनियर
दक्षिण पश्चिम रेलवे

हुब्बल्लि

## संपादक मंडल

**संरक्षक**
श्री मुकुल सरन माथुर
महाप्रबंधक

**मुख्य संपादक**
श्रीमती शोभना गुप्ता
मुख्य राजभाषा अधिकारी एवं
प्रधान मुख्य सिगनल एवं
दूरसंचार इंजीनियर

**संपादक**
श्री सचिन रा जैन
वरिष्ठ राजभाषा अधिकारी

**सह संपादक**
श्री एम सावंतनवर
वरिष्ठ अनुवादक

**उप संपादक**
श्री रमा कांत प्रसाद
वरिष्ठ अनुवादक

**सहयोगी**
श्री धिरेंद्र कुमार
कनिष्ठ अनुवादक,
श्री गोपाल लाल मीना
कनिष्ठ लिपिक सह टंकक,
श्रीमती गजाला अ. करीम
कनिष्ठ लिपिक सह टंकक,
श्रीमती यल्लम्मा शिवप्पा कुशेमनवर
कार्यालय सहायक

# संपादक की कलम से.....

## संदेश

वरिष्ठ राजभाषा अधिकारी
प्रधान कार्यालय, दक्षिण पश्चिम रेलवे

मझे अत्यंत खुशी है कि दक्षिण पश्चिम रेलवे के राजभाषा विभाग द्वारा प्रकाशित पत्रिका "अभिव्यक्ति" के 55 वें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है।

भाषा के विकास तथा प्रचार–प्रसार में पत्रिकाओं की अहम भूमिका होती है। यह पत्रिका रेलकर्मियों में राजभाषा के प्रचार–प्रसार के लिए प्रयासरत है। इसमें राजभाषा विभाग के ही नहीं बल्कि अन्य विभागों के कर्मचारियों के लेख, रचनाएँ आदि संग्रहित हैं। जिस भाषा में हम सोचते हैं उस भाषा में कार्य करना सरल और सहज होता है। केंद्रीय सरकारी कार्यालयों की राजभाषा हिंदी में हम सब सरल–सहज रूप से अपना दैनंदिन काम–काज करें, यही इस पत्रिका के प्रकाशन का मुख्य उद्देश्य है।

यह पत्रिका दक्षिण पश्चिम रेलवे की गतिविधियों से अधिकारियों और कर्मचारियों को परिचित कराने के लिए पूर्ववर्ती अंकों की तरह इस अंक में भी कुछ महत्वपूर्ण गतिविधियों की झलकियां फोटों सहित दी गई हैं। मुझे आशा है कि अभिव्यक्ति का यह अंक आपको पसंद आएगा। इसे और अधिक रुचिकर बनाने के लिए आपके महत्वपूर्ण सुझावों की हमें प्रतीक्षा रहेगी। आप सभी पाठकों एवं रचनाकारों के रचनात्मक सहयोग से ही "अभिव्यक्ति" अपनी यात्रा पर तेज गति से आगे बढ़ पायेगी।

पत्रिका के इस नवीनतम अंक में स्थान प्राप्त रचनाओं के रचनाकार बधाई के पात्र हैं। आशा है कि पत्रिका के इस विकास यात्रा में आप भरपूर सहयोग देते रहेंगे। "अभिव्यक्ति" पत्रिका के अनवरत प्रकाशन के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।

आपका

सचिन रा जैन
वरिष्ठ राजभाषा अधिकारी
राजभाषा विभाग, प्रधान कार्यालय, दपरे

**पत्राचार का पता**

क्षेत्रीय प्रधान कार्यालय
राजभाषा विभाग, रेल सौधा, गदग रोड, हुब्बल्लि – 580020
फोन नं.: 0836-23-25034/20

Zonal Headquarters' Office
Rajbhasha Department, Rail Soudha,
Gadag Road, Hubballi - 580020
Email Id - srrba.swr.ubl@gmail.com

पत्रिका में प्रकाशित लेखों, रचनाओं आदि में व्यक्त विचार लेखकों, रचनाकारों के अपने हैं, जिसके लिए संपादक मंडल उत्तरदायी नहीं है।

# विश्व पर्यावरण दिवस

विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर, भारतीय रेलवे ने 22 मई से 5 जून तक एक विशेष पंद्रह दिवसीय अभियान चलाया। इस वर्ष की थीम "प्लास्टिक प्रदूषण समाप्त करें" के अंतर्गत, भारतीय रेलवे के सभी ज़ोनों, मंडलों, स्टेशनों और कार्यालयों में विभिन्न जागरूकता गतिविधियाँ आयोजित की गईं। इस अभियान में रेल कर्मचारियों, यात्रियों और आम जनता ने सक्रिय रूप से भाग लिया। इस जागरूकता कार्यक्रम में प्लास्टिक कचरे का आकलन, कचरे का पृथक्करण, प्लास्टिक बोतल क्रशिंग मशीनों की समीक्षा, स्वच्छता और जल संरक्षण हेतु पहल एवं प्लास्टिक के उपयोग को कम करने जैसे कदम शामिल थे।

5 जून को पर्यावरण संरक्षण की शपथ ली गई, जिसमें प्लास्टिक के कम उपयोग, स्वच्छता और ऊर्जा संरक्षण पर ज़ोर दिया गया। रेलवे बोर्ड स्तर पर, सदस्य (ट्रैक्शन एंड रोलिंग स्टॉक) द्वारा अन्य बोर्ड सदस्यों और क्षेत्रीय रेलवे के महाप्रबंधकों की उपस्थिति में वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से शपथ दिलाई गई। इस अवसर पर, भारतीय रेलवे ने अपनी वार्षिक पर्यावरण स्थिरता रिपोर्ट भी जारी की। अभियान के दौरान, लगभग 150 टन प्लास्टिक कचरे का सुरक्षित निपटान किया गया। 1230 से अधिक स्टेशनों पर पोस्टर और डिजिटल मीडिया के माध्यम से जागरूकता फैलाई गई। 740 से अधिक कार्यशालाओं का आयोजन किया गया, 1200 स्टेशनों पर स्वच्छता अभियान चलाए गए, 180 से अधिक प्लास्टिक बोतल क्रशिंग मशीनों के प्रदर्शन की समीक्षा की गई और जमीनी स्तर पर जागरूकता बढ़ाने के लिए लगभग 230 नुक्कड़ नाटक किए गए।

भारतीय रेल पर्यावरणीय स्थिरता के लिए निरंतर प्रतिबद्ध है। वर्ष 2025-26 के लिए पर्यावरणीय गतिविधियों हेतु समर्पित 750 करोड़ की एक व्यापक योजना को मंजूरी दी गई है। अब तक, 98% ब्रॉड गेज मार्गों का विद्युतीकरण हो चुका है। 3512 स्टेशनों और सेवा भवनों पर सौर रूफ़टॉप स्थापित कर लगभग 227 मेगावाट की विद्युत उत्पादन क्षमता निर्मित की गई है। सभी रेलवे स्टेशनों, कार्यालयों और आवासीय परिसरों को 100% एलईडी प्रकाश व्यवस्था से सुसज्जित किया गया है। इसके अतिरिक्त, भारतीय रेल ने हाइड्रोजन ईंधन आधारित ट्रेनों के विकास, 2014 से अब तक 9.7 करोड़ पौधे लगाने और यात्री डिब्बों में 100% बायो-टॉयलेट लगाने जैसी पहलों के माध्यम से पर्यावरण संरक्षण की दिशा में ठोस कदम उठाए हैं। भारतीय रेलवे पर्यावरण के प्रति अपनी जिम्मेदारी को स्वीकार करते हुए भविष्य में और अधिक हरित एवं स्वच्छ परिवहन प्रणाली बनाने के लिए संकल्पित है।

# ನೈಋತ್ಯ ರೈಲ್ವೆ ವಲಯದ 228 ನಿಲ್ದಾಣಗಳಲ್ಲಿ AI ಆಧಾರಿತ ಸಿಸಿಟಿವಿ ಕಣ್ಗಾವಲು

ಉದ್ದಾನಯ್ಯ ಐ ಜೆ
ಹಿರಿಯ ಪ್ರಚಾರ ನಿರೀಕ್ಷಕರು
ಸಾರ್ವಜನಿಕ ಸಂಪರ್ಕ ಇಲಾಖೆ
ಪ್ರಧಾನ ಕಛೇರಿ, ನೈಋತ್ಯ ರೈಲ್ವೆ ಹುಬ್ಬಳ್ಳಿ

ನೈಋತ್ಯ ರೈಲ್ವೆ (SWR) ಮೊದಲಬಾರಿಗೆ ಭಾರತೀಯ ರೈಲ್ವೆಯಲ್ಲಿ ಅತ್ಯಾಧುನಿಕ ಕನ್ವರ್ಜ್ಡ್ ಕಮ್ಯುನಿಕೇಷನ್ ಸಿಸ್ಟಮ್ (CCS) ಅನ್ನು ಸ್ಥಾಪಿಸಲು ಮುಂದಾಗಿದೆ. 55 ಕೋಟಿಯ ಈ ಮಹತ್ವಾಕಾಂಕ್ಷಿ ಯೋಜನೆ ಧ್ವನಿ, ವಿಡಿಯೋ ಮತ್ತು ಡೇಟಾ ಸೇವೆಗಳನ್ನು ಒಂದೇ ನೆಟ್‌ವರ್ಕ್‌ಗೆ ಸಂಯೋಜಿಸುವ ಮೂಲಕ ಕಾರ್ಯಾಚರಣಾ ಸಂವಹನ ಮತ್ತು ಭದ್ರತಾ ಮೂಲಸೌಕರ್ಯವನ್ನು ಸಮಗ್ರವಾಗಿ ಪರಿವರ್ತಿಸಲು ಉದ್ದೇಶಿಸಿರುತ್ತದೆ.

ಈ ಹೊಸ ವ್ಯವಸ್ಥೆಯು ನಿಲ್ದಾಣಗಳು, ರೈಲುಗಳು ಮತ್ತು ಕಾರ್ಯಾಚರಣೆ ಕೇಂದ್ರಗಳ ನಡುವೆ ತಡೆರಹಿತ ಹಾಗೂ ಸುರಕ್ಷಿತ ಸಂವಹನವನ್ನು ಖಚಿತಪಡಿಸುತ್ತದೆ. ಇದರ ಪ್ರಮುಖ ಅಂಶವೆಂದರೆ 228 ರೈಲ್ವೆ ನಿಲ್ದಾಣಗಳಲ್ಲಿ ಅಡ್ವಾನ್ಸ್ಡ್ ವಿಡಿಯೋ ಸರ್ವೆಲಿಯನ್ಸ್ ಸಿಸ್ಟಮ್ (VSS) ನಿಯೋಜನೆಯಾಗಿರುವುದು. ಇವುಗಳಲ್ಲಿ 14 ನಿಲ್ದಾಣಗಳನ್ನು ನಿರ್ಭಯಾ ನಿಧಿಯಿಂದ ಹಾಗೂ ಉಳಿದ 214 ನಿಲ್ದಾಣಗಳನ್ನು ಬಂಡವಾಳ ವೆಚ್ಚದಿಂದ ಅಭಿವೃದ್ಧಿಪಡಿಸಲಾಗುತ್ತಿದೆ.

VSS ಜಾಲತಾಣದಡಿಯಲ್ಲಿ, ನಿಲ್ದಾಣಗಳಲ್ಲಿ ಪ್ಯಾನ್-ಟಿಲ್ಟ್ -ಜೂಮ್ (PTZ) ಸಾಮರ್ಥ್ಯವಿರುವ 2,784 ಹೈ-ಡೆಫಿನಿಷನ್ ಕ್ಯಾಮೆರಾಗಳನ್ನು ಹಾಗೂ 4K ಅಲ್ಟ್ರಾ HD ಬುಲೆಟ್ ಕ್ಯಾಮೆರಾಗಳನ್ನು ನಿರ್ಣಾಯಕ ಸ್ಥಳಗಳಲ್ಲಿ ಸ್ಥಾಪಿಸಲಾಗಿದೆ. ಈ ಕ್ಯಾಮೆರಾಗಳು ಕೃತಕ ಬುದ್ಧಿಮತ್ತೆ (AI)-ಶಕ್ತಗೊಂಡ ಫೇಸ್ ರೆಕಗ್ನಿಷನ್ ಸಿಸ್ಟಮ್ (FRS), ವೀಡಿಯೊ ಅನಾಲಿಟಿಕ್ಸ್ (VA), ಹಾಗೂ ಕೇಂದ್ರೀಕೃತ ವೀಡಿಯೊ ಮ್ಯಾನೇಜ್ಮೆಂಟ್ ಸಿಸ್ಟಮ್ (VMS) ನೊಂದಿಗೆ ಕಾರ್ಯನಿರ್ವಹಿಸುತ್ತವೆ. ಎಲ್ಲ ಡೇಟಾವನ್ನು ವಿಭಾಗೀಯ ಹಾಗೂ ವಲಯ ಮಟ್ಟದ ಇಂಟಿಗ್ರೇಟೆಡ್ ಕಮಾಂಡ್ ಅಂಡ್ ಕಂಟ್ರೋಲ್ ಸೆಂಟರ್‌ಗಳು (ICCC) ಮೂಲಕ ಮೇಲ್ವಿಚಾರಣೆ ಮಾಡಲಾಗುತ್ತದೆ.

ಈ ಹೊಸ CCS, ಹಳೆಯ ಸಿನ್-ಕ್ರೋನಸ್ ಡಿಜಿಟಲ್ ಹೈರಾರ್ಕಿ (SDH) ತಂತ್ರಜ್ಞಾನಕ್ಕಿಂತ ಹೆಚ್ಚು ದೃಢವಾದ ಮತ್ತು ಸ್ಕೇಲೆಬಲ್ ತಂತ್ರಜ್ಞಾನವಾಗಿದೆ. SDH ತಂತ್ರಜ್ಞಾನಕ್ಕೆ ಬ್ಯಾಂಡ್ ವಿಡ್ತ್ ದಕ್ಷತೆ ಮತ್ತು ನಮ್ಯತೆಯಲ್ಲಿ ಮಿತಿಗಳು ಇದ್ದರೂ, ಹೊಸ ವ್ಯವಸ್ಥೆ ಡೈನಾಮಿಕ್ ರೂಟಿಂಗ್, ಉತ್ತಮ ಬ್ಯಾಂಡ್ ವಿಡ್ತ್ ಬಳಕೆ ಮೂಲಕ ರೈಲ್ವೇ ಸಂವಹನದ ಮುಂದಿನ ಅಗತ್ಯಗಳಿಗೆ ಉತ್ತಮ ಹೊಂದಾಣಿಕೆಯಾಗುತ್ತದೆ.

AI ಆಧಾರಿತ CCTV ಸಿಸ್ಟಮ್‌ಗಳು ಲೈವ್ ಫೂಟೇಜ್ ಅನ್ನು ಟ್ರ್ಯಾಕ್ ಮಾಡಲು ಮಶೀನ್ ಲರ್ನಿಂಗ್ ಅಲ್ಗಾರಿದಮ್‌ಗಳನ್ನು ಬಳಸುತ್ತವೆ. ಇವು ಅಸಾಮಾನ್ಯ ಚಲನಶೀಲತೆ, ಬೆಳಕಿನ ಬದಲಾವಣೆ, ಬಣ್ಣದ ಮಾದರಿ (ಉದಾ. ಕೆಂಪು ಶರ್ಟ್ ಧರಿಸಿದ ವ್ಯಕ್ತಿ) ಮತ್ತು ಅಪಾಯಕಾರಿ ಸಂದರ್ಭಗಳು (ಉದಾ. ವ್ಯಕ್ತಿ ಬಿದ್ದುಹೋಗುವಿಕೆ) ಯನ್ನು ಗುರುತಿಸಲು ಸಹಕಾರಿಯಾಗಿದೆ.

ಮೈಸೂರು ವಿಭಾಗ ಈಗಾಗಲೇ 31 ನಿಲ್ದಾಣಗಳಲ್ಲಿ ಈ ಅತ್ಯಾಧುನಿಕ ಸಿಸಿಟಿವಿ ವ್ಯವಸ್ಥೆಯನ್ನು ಸ್ಥಾಪಿಸಿದ್ದು, ಇಂಟಿಗ್ರೇಟೆಡ್ ಕಮಾಂಡ್ ಅಂಡ್ ಕಂಟ್ರೋಲ್ ಸೆಂಟರ್ (ICCC) ಮತ್ತು ನೆಟ್‌ವರ್ಕ್ ಆಪರೇಷನ್ ಸೆಂಟರ್ (NOC) ಅನ್ನು ಆರಂಭಿಸಿದೆ. ಇದರ ಜೊತೆಗೆ, VoIP ಆಧಾರಿತ ಟ್ರೈನ್ ಕಂಟ್ರೋಲ್ ಕಮ್ಯುನಿಕೇಶನ್ ಸಿಸ್ಟಮ್ (TCCS) ಮೈಸೂರು ವಿಭಾಗದ 71 ನಿಲ್ದಾಣಗಳಲ್ಲಿ ಯಶಸ್ವಿಯಾಗಿ ಕಾರ್ಯನಿರ್ವಹಿಸುತ್ತಿದೆ.

ಮೈಸೂರು, ಪಾಂಡವಪುರ ಮತ್ತು ಮಂಡ್ಯ ಸೇರಿದಂತೆ ಪ್ರಮುಖ ನಿಲ್ದಾಣಗಳಲ್ಲಿ ಭದ್ರತಾ ಲೆಕ್ಕಪರಿಶೋಧನೆ ಪೂರ್ಣಗೊಂಡಿದೆ. "ಮೈಸೂರು ವಿಭಾಗದಲ್ಲಿ CCS ನ ಸಂಪೂರ್ಣ ಅನುಷ್ಠಾನವನ್ನು ಯಶಸ್ವಿಯಾಗಿ ಪೂರ್ಣಗೊಳಿಸಿರುವ ನೈಋತ್ಯ ರೈಲ್ವೆ, 2025ರ ಸೆಪ್ಟೆಂಬರ್ ವೇಳೆಗೆ ಈ ವ್ಯವಸ್ಥೆಯನ್ನು ಸಂಪೂರ್ಣ ವಲಯದ ಹುಬ್ಬಳ್ಳಿ ಮತ್ತು ಬೆಂಗಳೂರು ವಿಭಾಗದಲ್ಲಿ ರೋಲ್ ಮಾಡುವ ಗುರಿಯತ್ತ ಸಾಗುತ್ತಿದೆ".

# दक्षिण पश्चिम रेलवे द्वारा 11 वां अंतरराष्ट्रीय योग दिवस का आयोजन

दक्षिण पश्चिम रेलवे द्वारा हुब्बल्लि के गदग रोड स्थित चालुक्य रेलवे संस्थान में 11वां अंतरराष्ट्रीय योग दिवस सुबह 6 से 8 बजे तक उत्साहपूर्वक मनाया गया। सुविख्यात योग प्रशिक्षक व राज्य स्तरीय स्वर्ण पदक विजेता, श्रीमती उषा मोद ने सत्र का नेतृत्व किया और प्रतिभागियों को विभिन्न आसनों का अभ्यास कराया। उन्होंने योग को अपनी दिनचर्या में शामिल करने पर होने वाले अनेक लाभों के बारे में बताया। उन्होंने इस बात पर ज़ोर देते हुए कहा कि नियमित योगाभ्यास मानसिक, शारीरिक और भावनात्मक स्वास्थ्य को बनाए रखने में मदद करता है।

इस कार्यक्रम में दक्षिण पश्चिम रेलवे के महाप्रबंधक श्री मुकुल सरन माथुर, अपर महाप्रबंधक के.एस. जैन, विभिन्न विभागों के प्रमुख विभागाध्यक्ष, अन्य वरिष्ठ अधिकारी, दक्षिण पश्चिम रेलवे महिला एवं बाल विकास संगठन के सदस्य, भारत स्काउट्स एवं गाइड्स के सदस्य तथा अन्य कर्मचारियों ने भी योग एवं प्राणायाम सत्र में भाग लिया। उपस्थित लोगों को संबोधित करते हुए महाप्रबंधक ने दैनिक जीवन में योग के महत्व पर बल दिया और सभी को योग को अपनी जीवनशैली में शामिल करने की सलाह दी। अंतरराष्ट्रीय योग दिवस दक्षिण पश्चिम रेलवे के बेंगलूरु, हुब्बल्लि और मैसूरु मंडलों के साथ-साथ अन्य इकाइयों में भी मनाया गया।

## सुकून

एम सावंतनवर
वरिष्ठ अनुवादक, राजभाषा विभाग
प्रधान कार्यालय, दपरे

दिल का सुकून और नया पहल कहाँ से लाओगे।
मेरे बिना अपने आपमें ऊर्जा कहां से लाओगे।।
मन में ना महक है ना ही साँसों में सरगम।
गज़ल की आंखों में आंसू कहां से लाओगे।।
मैं थोड़ा थोड़ा-सा बटा हूं हर कोने में।
पता नहीं, तुम मुझको कहां कहां से लाओगे।।
पहले था गिला तुमसे अब वो भी नहीं रहा।
चार आंखों के लिए आईना कहां से लाओगे।।
दर्द से दर्द मिलकर दर्द-ए-दवा बन जाता है।
दिलों के जख्मों को मरहम कहां से लाओगे।।
बाहर खुश है और अंदर नमी, हम दोनों में।
शायद थोड़ा थोड़ा-सा कमी है हम दोनों में।।
दिल का सुकून और नया पहल कहां से लाओगे।
मेरे बिना अपने आपमें ऊर्जा कहां से लाओगे।।
मेरे बिना अपने आपमें ऊर्जा कहां से लाओगे।।।

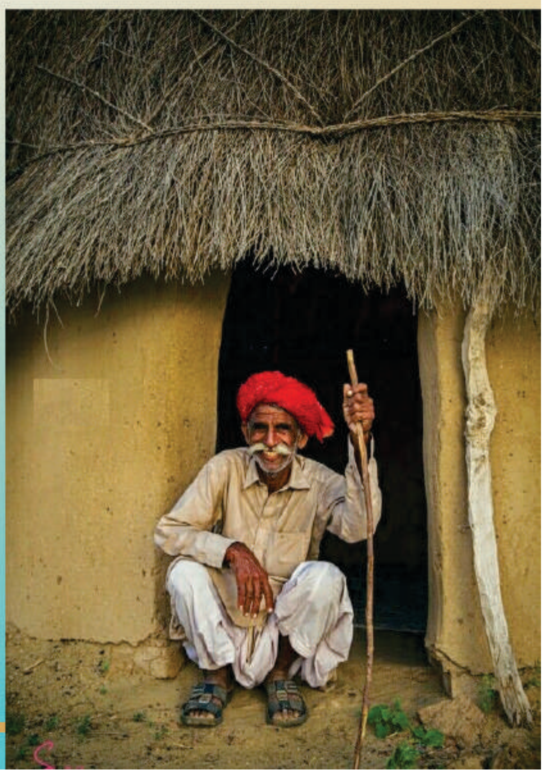

# मैथिलीशरण गुप्त

धिरेंद्र कुमार
कनिष्ठ अनुवादक/ हिंदी
राजभाषा विभाग
प्रधान कार्यालय, दपरे

राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त जी का जन्म दिनांक 3 अगस्त 1886 को चिरगाँव, झाँसी, उत्तर प्रदेश में हुआ था। संभ्रांत वैश्य परिवार में जन्मे मैथिलीशरण गुप्त के पिता का नाम 'सेठ रामचरण' और माता का नाम 'श्रीमती काशीबाई' था। पिता रामचरण एक निष्ठावान प्रसिद्ध रामभक्त थे। उनके व्यक्तित्व में प्राचीन संस्कारों तथा आधुनिक विचारधारा दोनों का समन्वय था। मैथिलीशरण गुप्त जी को हिंदी साहित्य जगत में 'दद्दा' के नाम से भी जाना जाता है।

मैथिलीशरण गुप्त की प्रारम्भिक शिक्षा चिरगाँव, झाँसी के राजकीय विद्यालय में हुई। प्रारंभिक शिक्षा समाप्त करने के उपरान्त उन्हें झाँसी के मेकडॉनल हाईस्कूल में अंग्रेज़ी पढ़ने के लिए भेजा गया, पर वहाँ इनका मन न लगा और दो वर्ष पश्चात ही घर पर उनकी शिक्षा का प्रबंध किया गया। इन्होंने घर पर ही संस्कृत, हिन्दी तथा बांग्ला साहित्य का व्यापक अध्ययन किया।

आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी जब झाँसी के रेलवे ऑफिस में चीफ़ क्लर्क थे, तब गुप्तजी अपने बड़े भाई के साथ उनसे मिलने गए और कालांतर में उन्हीं की छत्रछाया में मैथिलीशरण जी की काव्य प्रतिभा पल्लवित व पुष्पित हुई। वे द्विवेदी जी को अपना काव्य गुरु मानते थे और उन्हीं के बताये मार्ग पर चलते रहे तथा जीवन के अंत तक साहित्य साधना में लगे रहे।

महात्मा गांधी, राजेन्द्र प्रसाद, जवाहर लाल नेहरू और विनोबा भावे के सम्पर्क में आने के कारण वह गांधीवाद के व्यवहारिक पक्ष और सुधारवादी तथा राष्ट्रीय आंदोलनों में भाग लिए और जेल भी गए। वर्ष 1936 में गांधी ने ही उन्हें मैथिली काव्य-मान ग्रन्थ भेंट करते हुए राष्ट्रकवि का नाम दिया। वर्ष 1909 में उनका पहला काव्य जयद्रथ-वध आया। जयद्रथ-वध की लोकप्रियता ने उन्हें लेखन और प्रकाशन की प्रेरणा दी। 59 वर्षों में गुप्त जी ने गद्य, पद्य, नाटक, मौलिक तथा अनूदित सब मिलाकर, हिन्दी में लगभग 74 रचनाएँ प्रदान की हैं। जिनमें 2 महाकाव्य, 20 खंड काव्य, 17 गीतिकाव्य, 4 नाटक और गीतिनाट्य हैं।

भारत सरकार ने उनकी सेवाओं को देखते हुए उन्हें दो बार राज्यसभा की सदस्यता प्रदान की। हिन्दी में मैथिलीशरण गुप्त की काव्य-साधना सदैव स्मरणीय रहेगी। बुंदेलखंड में जन्म लेने के कारण गुप्त जी बोलचाल में बुंदेलखंडी भाषा का ही प्रयोग करते थे। उन्होंने अपनी साहित्यिक साधना से हिन्दी को समृद्ध किया। वे भारतीय संस्कृति एवं इतिहास के परम भक्त थे। परन्तु अंधविश्वासों और थोथे आदर्शों में उनका विश्वास नहीं था। वे भारतीय संस्कृति की नवीनतम रूप की कामना करते थे।

साकेत, यशोधरा उनके महाकाव्य हैं। जयद्रथ वध, भारत-भारती, पंचवटी किसान, जय भारत, शकुंतला, विष्णुप्रिया, उर्मिला उनके प्रमुख खण्डकाव्य हैं। रंग में भंग, राजा-प्रजा, हिड़िम्बा, हिन्दू, चंद्रहास आदि उनके प्रसिद्ध नाटक हैं। पत्रावली पत्रों का संग्रह है। मैथिलीशरण गुप्त ग्रन्थावली उनके मौलिक तथा अनूदित समग्र कृतियों का संकलन हैं।

अपने महाकाव्य 'साकेत' में भी वे राम के द्वारा कहलाते हैं-

भव में नव वैभव व्याप्त कराने आया,
नर को इश्वरता प्राप्त कराने आया।
संदेश यहां में नहीं स्वर्ग को लाया,
इस भूतल को ही स्वर्ग बनाने आया।

गुप्त जी के उक्त पंक्तियों से पता चलता है कि उनकी भागवत भावना महान थी, और वे मानवतावाद के पोषक और समर्थक थे।

भारत-भारती कविता में देश की तात्कालिक दुर्दशा पर क्षोभ प्रकट करते हुए कवि ने देश के अतीत का अत्यंत गौरव और श्रद्धा के साथ गुणगान किया। भारत श्रेष्ठ था, है और सदैव रहेगा का भाव निम्न पंक्तियों से करते हैं-

भूलोक का गौरव, प्रकृति का पुण्य लीला-स्थल कहाँ?
फैला मनोहर गिरि हिमालय और गंगाजल कहाँ?
संपूर्ण देशों से अधिक किस देश का उत्कर्ष है?
उसका कि जो ऋषि भूमि है, वह कौन, भारतवर्ष है।

उनकी कविता "नर हो, न निराश करो मन को" में कहते हैं

"नर हो, न निराश करो मन को"
कुछ काम करो, कुछ काम करो
जग में रह कर कुछ नाम करो।
यह जन्म हुआ किस अर्थ अहो
समझो जिसमें यह व्यर्थ न हो।
कुछ तो उपयुक्त करो तन को
नर हो, न निराश करो मन को।

इन पंक्तियों से पता चलता है कि वह मानसिक और आत्मिक रूप से प्रबल व्यक्ति थे।

इनकी साहित्य सेवाओं के उपलक्ष्य में आगरा विश्वविद्यालय तथा बनारस हिंदू विश्वविद्यालय ने इन्हें डी. लिट. की उपाधि से विभूषित भी किया। वर्ष 1952 में गुप्त जी राज्य सभा के सदस्य मनोनीत हुए और वर्ष 1954 में उन्हें 'पद्मभूषण' अलंकार से सम्मानित किया गया। इसके अतिरिक्त उन्हें हिन्दुस्तानी अकादमी पुरस्कार, 'साकेत' पर 'मंगला प्रसाद पारितोषिक' तथा 'साहित्य वाचस्पति' की उपाधि से भी अलंकृत किया गया। भारत के इस महान व देशभक्त रचनाकार मैथिलीशरण गुप्त जी का देहावसान दिनांक 12 दिसंबर, 1964 को चिरगांव में ही हुआ।

# अंतरराष्ट्रीय योग दिवस

राजवीर सिंह जादौन
तकनीशियन–III, इंजीनियरी विभाग
प्रधान कार्यालय, दपरे

21 जून की सुबह कुछ अलग ही होती है। सूरज जैसे किसी विशेष उर्जा के साथ उगता है। उस दिन केवल दिन लंबा नहीं होता है, बल्कि मन भी विस्तृत होता है। ये दिन है–अंतरराष्ट्रीय योग दिवस का।

यह कोई सरकारी आयोजन नहीं, यह एक आंतरिक उत्सव है। जब दुनिया एक साथ चुपचाप बैठती है, आंखें बंद करती है, और स्वयं को स्वयं से जोड़ने की कोशिस करती है – तो यह केवल योग नहीं, यह आत्म साक्षात्कार है।

योग शब्द सुनते ही लोगों के मन में आसनों की तस्वीरें आती हैं। लेकन योग का अर्थ इतना सीमित नहीं है। यह केवल शरीर को मोड़ने का अभ्यास मात्र नहीं है, बल्कि जीवन को संवारने का विज्ञान है।

'योग' संस्कृत की 'युज' धातु से बना है जिसका अर्थ होता है – जोड़ना,परंतु किससे ?

1. मन को शरीर से
2. जीवन को अनुशासन से
3. अंतत: आत्मा को परमात्मा से।

योग हमें सिर्फ स्वस्थ ही नहीं बल्कि पूर्ण भी बनाता है।

वर्ष 2014 में भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने संयुक्त राष्ट्र महासभा में योग को अंतरराष्ट्रीय मान्यता दिलाने का प्रस्ताव रखा। मोदी जी के शब्द थे ; 'योग भारत की अमूल्य धरोहर है। यह स्वास्थ्य और सौहार्द्र का उपहार है, तनाव से मुक्ति का उपाय है और एकता की राह है।'

21 जून जो साल का सबसे बड़ा दिन होता है, उसे चुना गया है। यह दिन योग की उर्जा, संतुलन और प्रकाश का दिन बन गया है। योग केवल कसरत नहीं, बल्कि जीवन दर्शन है। यह हर अवस्था में हर उम्र के लोगों के लिए कुछ न कुछ देता है। हठयोग, राजयोग, भक्तियोग, कर्मयोग, ज्ञानयोग ये पांचों मार्ग मिलकर योग को एक समग्र जीवन पद्धति बनाते हैं। हर साल 21 जून को भारत ही नहीं बल्कि पूरी दुनिया योग में लीन हो जाती है, न्यूयॉर्क के टाइम्स स्कवायर पर, पेरिस के एफिल टावर, ऑस्ट्रेलिया, ब्राजील, रूस, केन्या में हर जगह योग की गूंज है।

आज हर व्यक्ति कहीं न कहीं भाग रहा है। कोई अपने लक्ष्य की ओर, कोई नाम की ओर, कोई संपत्ति की ओर लेकिन इसी दौड़ में हम खुद को खो देते हैं। योग हमें रोकने, समझने और फिर चलने की कला सिखाता है। यह केवल शारीरिक ही नहीं मानसिक और भावनात्मक थकान को भी दूर करता है। आज के बच्चे तनाव और प्रतिस्पर्द्धा के बोझ तले दबे हैं। सोशल मीडिया, ऑनलाईन गेम्स, परीक्षा का दबाव ये सब उनके मन पर बुरा असर डालते हैं, योग उन्हें ध्यान, आत्मबल, भावनात्मक स्थिरता और संयम देता है। रेलवे जैसे विशाल संगठन में जहां हजारों कर्मचारी दिन–रात यात्रियों की सेवा मे लगे रहते हैं, वहां मानसिक तनाव, थकान और असंतुलन आम समस्या है। योग थकान को कम करता है, शरीर को चुस्त रखता है, निर्णय लेने की क्षमता को बढ़ाता है और टीम भावना को मजबूत करता है। आज रेलवे, डाक, पुलिस, सेना जैसे विभागों में नियमित योग शिविरों का आयोजन एक स्वागत योग्य बदलाव है। भारत सरकार ने योग को घर–घर पहुंचाने के लिए कई प्रयास किए हैं – जैसे AYUSH मंत्रालय की स्थापना, योग प्रमाणन पाठ्यक्रम, स्कूलों में योग अनिवार्य, प्रसार भारती पर नियमित योग कार्यक्रम आदि।

योग किसी धर्म का अनुयायी नहीं है, यह केवल मानवता की बात करता है, योग सबके लिए है। योग केवल एक दिवस नहीं एक दिशा है। अंतरराष्ट्रीय योग दिवस हमें साल में एक बार रुकने, सांस लेने और खुद से जड़ने का मौका देता है, लेकिन असल योग तब शुरु होता है, जब हम इसे हर दिन का हिस्सा बना लेते हैं।

"योग करना आसान है बस शुरुआत कीजिए"

आइए इस वर्ष 21 जून को हम सब केवल योग न करके बल्कि इसे जीवन का अभिन्न अंग बना लें, क्योंकि जब मन शांत रहता है तभी समाज स्वस्थ होता है।

योग करें, रोग दूर करें
योग करें, जीवन भरपूर जिएं।

## पौधारोपण

## मैन ऑफ द मंथ

## रेक लिंक बुकलेट का विमोचन

## दपरे महिला कल्याण संगठन द्वारा मजदूर दिवस मनाया गया

## आरपीएफ कंट्रोल ऑफिस – हुब्बल्लि मंडल का उद्घाटन

## कर्नाटक के केंद्रीय मंत्री द्वारा हुब्बल्लि–कुष्टगी स्पेशल ट्रेन का हरी झंडी दिखाकर रवाना

## कर्नाटक के केंद्रीय मंत्रियों द्वारा सिंधनूरु–रायचूरु नई लाइन की आधारशिला रखी गयी

## रेल राज्य मंत्री श्री वी. सोमण्ण द्वारा हुब्बल्लि स्टेशन का निरीक्षण

# केएसआर बेंगलूरु-एसएसएसएस हुब्बल्लि ट्रेन का सिंधनूरु तक विस्तार

केएसआर बेंगलूरु और एसएसएसएस हुब्बल्लि के बीच चलने वाली ट्रेन (नंबर 17391/92) को सिंधनूरु तक विस्तार दिया गया। इस विस्तारित ट्रेन सेवा को रायचुरु जिले के सिंधनूरु में आयोजित एक समारोह में माननीय केंद्रीय रेल राज्य मंत्री श्री वी. सोमण्ण ने हरी झंडी दिखाकर रवाना किया।

इस अवसर पर श्री वी. सोमण्ण ने कहा कि इस क्षेत्र की बहु प्रतीक्षित रेल सेवा साकार हुई है। सिंधनूरु रेलवे स्टेशन पर जल्द ही एक आरक्षण केंद्र स्थापित किए जाने के साथ-साथ एक यात्री विश्राम गृह का निर्माण किया जाएगा और यात्रियों के लिए अतिरिक्त सुविधाएँ भी उपलब्ध कराई जाएँगी।

उन्होंने आगे कहा कि इस ट्रेन के विस्तार से इस क्षेत्र में व्यापार, उद्योग, कृषि और शिक्षा क्षेत्रों में तेजी से विकास होगा। उन्होंने बताया कि ट्रेन नंबर 17392 प्रतिदिन दोपहर 1:30 बजे सिंधनूरु से रवाना होगी और गदग अण्णिगेरी, शिश्विनहल्ली होते हुए शाम 6:10 बजे हुब्बल्लि पहुंचेगी। यहां से शाम 6:45 बजे रवाना होकर यह ट्रेन सुबह 3:55 बजे बेंगलूरु पंहुचेगी। वहीं ट्रेन संख्या 17391 प्रतिदिन रात 12:15 बजे बेंगलूरु से रवाना होकर सुबह 9:00 बजे हुब्बल्लि और दोपहर 2:20 बजे सिंधनूरु पहुंचेगी। इस दैनिक ट्रेन सेवा के शुरू होने से सिंधनूरु और आसपास के गाँवों के निवासियों को हुब्बल्लि और बेंगलूरु तक आसानी से यात्रा करने में मदद मिलेगी।

इस कार्यक्रम में कोप्पल लोकसभा सांसद के. राजशेखर हिटनाल, कर्नाटक राज्य औद्योगिक बुनियादी ढांचा विकास निगम के अध्यक्ष श्री हम्पनगौड़ा बादर्ली, कर्नाटक राज्य खादी एवं ग्रामोद्योग बोर्ड के अध्यक्ष आर. बसनगौड़ा तुरविहाल, विधान परिषद सदस्य श्री शरणगौड़ा पाटिल बैय्यापुर और श्री बसनगौड़ा बादर्ली के साथ-साथ दक्षिण पश्चिम रेलवे के वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित थे।

## ಕೌದಿ ಮತ್ತು ಅವ್ವ.

ಅಪ್ಪ ಉಟ್ಟುಬಿಟ್ಟ
ಹರಿದು ನೇತಾಡುವ ಲುಂಗಿ
ತಮ್ಮನ ತೂತು ಬಿದ್ದ ಚಡ್ಡಿ
ತಂಗಿಯರು ತೊಟ್ಟು ಬಿಟ್ಟಿರುವ
ಮಾಸಲು ಬಣ್ಣದ ಅಂಗಿ;
ಅಜ್ಜಿಯ ಹಳೆಯ ಸೀರೆ
ಅವ್ವ ಹೊಲಿಯುವ ಕೌದಿಯ ಸರಂಜಾಮು!.
    ಚುಮು ಚುಮು ಚಳಿಗೆ
    ಎದೆ ನಡುಗನ್ನು ನಿಲ್ಲಿಸಿ
    ರಕ್ಷಿಸಬಹುದಾದ ತಾಕತ್ತಿರುವುದು ಕೌದಿಗೆ.
    ಒಂದೇ,ಎರಡೇ..ಬಹು ವಿಧದ ಬಣ್ಣ
    ಹೊತ್ತೆಳೆದು ಮಲಗುವನು ಅಣ್ಣ.
ಮಹಾನವಮಿ ಶಿವರಾತ್ರಿ
ಯುಗಾದಿ,ದೀಪಾವಳಿಗೊಮ್ಮೆ ತೊಳೆಯಲ್ಪಟ್ಟು
ಮೂರೂ ಕಾಲಗಳನ್ನು ತನ್ನಲ್ಲಡಗಿಸಿ
ತಣ್ಣಗೆ ನಿದ್ರೆ ತರಿಸಿ ಕಾಯುವುದು
ಅದೇ ಅವ್ವ ಹೊಲಿದ ಆ ಕೌದಿ.
ಬೆಳ್ಳಕ್ಕಿ ಪಾದದಂತ ಹೊಲಿಗೆ..
ಉದ್ದ-ಅಗಲಕ್ಕೆ ಮೊಳ,ಮಾರಿನ ಲೆಕ್ಕ!
ಅಂಕಿ ಸಂಖ್ಯೆಗಳಿಲ್ಲ ಅವ್ವನ ಪ್ರೀತಿಗೆ
ಚಿಂದಿ ಬಟ್ಟೆಯನ್ನೆ ಚಿತ್ರವಾಗಿಸಿ
ಹಳೆಯದನ್ನು ಹೊಲಿದು ಹೊಸದಾಗಿಸಿ
ರಮಿಸಿ ಮಲಗಿಸುವಳು ಕೌದಿ ಹೊದಿಸಿ.
    ಕೌದಿ ಮತ್ತು ಅವ್ವ ನನ್ನೆರೆಡು ಕಣ್ಣು
    ಅವ್ವನ ಉಡಿಯೊಳಗೆ ಉರುಳಾಡಿದಾಗಲೂ
    ಕೌದಿ ಹೊದ್ದು ಮಲಗಿದಾಗಲು
    ಅದೇ ಧನ್ಯತಾ ಭಾವ..
    ನಮ್ಮೆಲ್ಲರ ತದ್ರೂಪವದು
    ಸವಕಲು ಬಟ್ಟೆಬರೆಗಳನ್ನು ಒಂದಕ್ಕೊಂದು ಸೇರಿಸಿ
    ಹೊಲಿದಿರುವ  ಚೆಂದದ ಬಂಧವದು.
ಕೌದಿಯೊಳಗೆ ಸಹಬಾಳ್ವೆಯಿದೆ
ಸರ್ವರ ಪಾಲೂ ಇದೆ;
ನವೀರಾದ ನಿಜ ಪ್ರೇಮವಿದೆ.
ಯಾಕೆಂದರೆ,ಅದು ಒಬ್ಬರಿಂದಾದದ್ದಲ್ಲ
ಸರ್ವರಿಂದ ಒಂದೊಂದು ತುಂಡು ಸೇರಿ
ಹದವಾಗಿ ಹೊಲಿದ ಹೊದಿಕೆಯದು.

ಚನ್ನಬಸಪ್ಪ ಚೌಗಲಾ ವಿಶ್ವಾರಾಧ್ಯಪ್ರಿಯ
ಟೆಕ್ನಿಷಿಯನ್-III ಮೆಕಾನಿಕಲ್ ವಿಭಾಗ,
ಹುಬ್ಬಳ್ಳಿ, ಕಾರ್ಖಾನೆ

## ಮೊನ್ನೆ ಬಂದ ಮಳೆಗೆ

ಮೊನ್ನೆ ಬಂದ ಮಳೆಗೆ
ಭೂಮಿ ತಣ್ಣಗಾಗುವಂತೆ
ನಿನ್ನೆ ನೀ ಬಂದ್ಹೋದ ಮೇಲೆ
ನನ್ನೆದೆಯಂಗಳ ಹಸಿರಾಗಿದೆ ಮನದೆನ್ನೆ
    ನಿನ್ನ ಕನಸುಗಳನ್ನೆ
    ಹಾಸಿ ಹೊದ್ದು ಮಲಗಿದ ನನಗೆ
    ಬೆಳಗಿನ ಪರಿವೆ ಇರದೆ ಮಲಗಿ ಬಿಟ್ಟಿರುವೆ
    ಮಧ್ಯಾಹ್ನದವರೆಗೆ!
ಮೋಡಗಳು ಕರಗಿ
ಸುರಿಯುವ ಮುಂಗಾರು ಸೋನೆಯಂತೆ
ಸದ್ದಿರದೆ ಗೆದ್ದಿರುವೆ ನೀ
ನನ್ನೆದೆಯ ಸಾಮ್ರಾಜ್ಯ!
    ಜಿಟಿ ಜಿಟಿಮಳೆಯಲಿ
    ಜಿಂಕೆಯಂತೆ ನೀ ಜಿಗಿಯುವಾಗ
    ನಿನ್ನ ಕಾಲ್ಗೆಜ್ಜೆ ನಾದಕೆ
    ನನ್ನೆದೆಯಲಿ ಮಿಂಚಿನ ಝುಲ್ ಎನ್ನುವ ನಿನಾದ..
ಮುಂಗಾರಿನಲ್ಲಿ ಭರದ ತೈಯಾರಿ
ನಾ ನಿನ್ನ ಪ್ರೀತಿಸುವ ಪೂಜಾರಿ
ಬಿತ್ತಬೇಕೆಂದಿರುವೆ ಪ್ರೀತಿಯೆಂಬೆರೆಡಕ್ಷರ
ಜೀವನ ಕೂರಿಗೆಗೆ ಕಟ್ಟಿ
    ನಡು ನಡುವೆ ಬೆಳೆವ
    ಕಳೆಯ ಕೀಳಲು
    ಎಳೆಯ ಮಗುವಿನಂತೆ ನಾನಿದ್ದು
    ನೀ ಕೊಟ್ಟಷ್ಟು ನಿಸ್ವಾರ್ಥ ಪ್ರೀತಿಯ ಉಚಿಡು
ಈ ವರುಷಧಾರೆಯಲಿ
ಹರ್ಷೋದ್ಗಾರದಿಂದ
ಮೊನ್ನೆ ಬಂದ ಮಳೆಗೆಸಣ್ಣದೊಂದು ಸಲಾಂ ಹೇಳಿ
ಯಥಾಪ್ರಕಾರ...
ತಗ್ಗಿನೆಡೆಗೆ ಹರಿಯುವ ನೀರಿನಂತೆ
ನಾ ನಿನ್ನನೆನಪಿನಲೆಯಲಿ ಮಿಂದ್ದೆದ್ದಿರುವೆ
ಮೊನ್ನೆ ಬಂದ ಮಳೆಯಲಿ..

# मैसूरु का दशहरा कर्नाटक की भव्य सांस्कृतिक धरोहर

सुरेश राठोड
वरिष्ठ जनसंपर्क निरीक्षक
जनसंपर्क विभाग, प्रधान कार्यालय, दपरे

मैसूरु दशहरा कर्नाटक राज्य का प्रमुख राज्योत्सव है, जिसे अत्यंत भव्यता और परंपरागत रीति-रिवाजों के साथ मनाया जाता है। यह 10 दिवसीय उत्सव होता है, जिसकी शुरुआत नवरात्रि से होती है और समापन विजयादशमी के दिन होता है। यह पर्व हिंदू पंचांग के अश्विन मास में मनाया जाता है, जो आमतौर पर सितंबर-अक्टूबर में आता है।

### त्योहार का धार्मिक महत्व

दशहरा, नवरात्रि और विजयादशमी, हिंदू धर्म में बुराई पर अच्छाई की जीत का प्रतीक माना जाता है। मान्यता है कि इसी दिन देवी चामुंडेश्वरी (दुर्गा का रूप) ने राक्षस महिषासुर का वध किया था। महिषासुर का वध ही उस नगर के नामकरण "मैसूरु" का आधार बना। यह त्योहार न केवल धार्मिक आस्था, बल्कि वीरता, नारी शक्ति और संस्कृति का प्रतीक है।

मैसूरु दशहरा के आयोजन में, शाही परंपरा के तहत राज्य की तलवार, हथियार, हाथियों और घोड़ों की पूजा की जाती है। देवी के योद्धा रूप की झांकी मुख्य आकर्षण होती है। इस समारोह की अध्यक्षता परंपरागत रूप से मैसूरु के वोडेयार राजा करते आए हैं।

### इतिहास की झलक

दशहरा उत्सव की नींव 15वीं शताब्दी में विजयनगर साम्राज्य के राजाओं ने रखी थी। इसे महानवमी के रूप में मनाया जाता था, जिसका उल्लेख हम्पी के हजार राम मंदिर की दीवारों पर अंकित कलाकृतियों में मिलता है। इतालवी यात्री "निकोलो दे कोंटी" ने भी इस उत्सव का उल्लेख एक भव्य धार्मिक और युद्ध-कला प्रदर्शन के रूप में किया है।

विजयनगर साम्राज्य के पतन के बाद, मैसूरु के वोडेयार वंश ने इस परंपरा को जारी रखा। राजा वोडेयार-I ने 1610 ई. में श्रीरंगपट्टण में पहली बार दशहरा उत्सव मनाया। तब से यह उत्सव मैसूरु पैलेस का अभिन्न हिस्सा बन चुका है।

### उत्सव की झलकियाँ

#### विशेष दरबार और पूजा

मैसूरु दशहरा के दौरान, शाही परिवार द्वारा एक विशेष दरबार आयोजित किया जाता है। महानवमी के दिन विशेष रूप से शाही तलवार की पूजा की जाती है और हाथियों, ऊँटों और घोड़ों की शोभायात्रा निकाली जाती है।

#### मैसूरु पैलेस की रोशनी

उत्सव का मुख्य आकर्षण मैसूरु पैलेस की भव्य रोशनी है। हर दिन शाम 7 से 10 बजे तक पैलेस को करीब 1 लाख बल्बों से सजाया जाता है। पैलेस के सामने कर्नाटक की सांस्कृतिक प्रस्तुतियाँ, नृत्य, संगीत आदि कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं।

#### जंबो सावरी (हाथी जुलूस)

विजयदशमी के दिन 'जंबो सावरी' नामक भव्य जुलूस निकाला जाता है। इस जुलूस में देवी चामुंडेश्वरी की मूर्ति को एक सजे हुए हाथी की पीठ पर रखे स्वर्ण मंटप (लगभग 750 किलोग्राम सोना) में विराजमान किया जाता है। यह शोभायात्रा मैसूरु पैलेस से बन्नीमंटप मैदान तक जाती है। मार्ग में सांस्कृतिक झांकियाँ, बैंड, नर्तक दल, सजे हुए हाथी, घोड़े और ऊँट सम्मिलित होते हैं। जुलूस के समापन पर बन्नी वृक्ष (प्राचीन 'शमी वृक्ष') की पूजा होती है, जिसका उल्लेख महाभारत में मिलता है।

#### मशाल कवायद (Torchlight Parade)

रात्रि में बन्नीमंटप मैदान पर आयोजित "मशालों की कवायद" उत्सव का अंतिम आकर्षण होती है। यह दृश्य अत्यंत भव्य, रोचक और ऐतिहासिक होता है।

#### दशहरा प्रदर्शनी

मैसूरु दशहरा के दौरान एक और बड़ा आकर्षण है दशहरा प्रदर्शनी, जो मैसूरु पैलेस के सामने आयोजित होती है। इसकी शुरुआत 1880 में राजा चामराजा वोडेयार द्वारा की गई थी। अब यह कर्नाटक प्रदर्शनी प्राधिकरण (KEA) द्वारा आयोजित की जाती है। प्रदर्शनी में विभिन्न प्रकार के खाद्य सामग्री, वस्त्र, खिलौने, सरकारी उपलब्धियों को प्रदर्शित करने वाले स्टॉल, और मनोरंजन के लिए झूले और खेल लगाए जाते हैं।

दक्षिण पश्चिम रेलवे (SWR) दशहरा उत्सव के दौरान भीड़ को नियंत्रित करने के लिए यशवंतपुर-कारवार और बेंगलूरु-मैसूरु-कारवार के बीच विशेष ट्रेनें चला रही है। इन विशेष ट्रेनों का उद्देश्य त्योहार के अवसर पर यात्रा करने वाले लोगों-चाहे वे अपने घर लौट रहे हों या उत्सव में शामिल होने जा रहे हों-की यात्रा को सुगम और सुविधाजनक बनाना है।

### निष्कर्ष

मैसूरु दशहरा केवल एक त्योहार नहीं है, बल्कि यह कर्नाटक की सांस्कृतिक पहचान, शक्ति की प्रतीक देवी की आराधना, और शाही परंपराओं का जीवंत दस्तावेज़ है। यह उत्सव न केवल भारतीय संस्कृति की विविधता को प्रतिबिंबित करता है, बल्कि जनमानस को एक सूत्र में बाँधने का कार्य भी करता है। प्रत्येक वर्ष यह पर्व लाखों पर्यटकों और श्रद्धालुओं को अपनी ओर आकर्षित करता है, जिससे यह एक राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय महत्व का आयोजन बन चुका है।

# भारत की प्रगति में रेलवे की भूमिका

बिट्टू यादव
कनिष्ठ लिपिक
निर्माण संगठन, बैंगलोर छावनी, दपरे

## प्रस्तावना

भारत एक विशाल और विविधताओं से भरा हुआ देश है। भारत की धार्मिक, आर्थिक, भाषायी, क्षेत्रीय, सामाजिक तथा राजनितिक विविधताएं भारत को एक अद्वितीय राष्ट्र बनाती है। भारत में व्याप्त इन सभी विविधताओं के बावजूद जिस तत्व ने देश को एक सूत्र में पिरोने का सबसे महत्वपूर्ण योगदान दिया है वह है भारतीय रेलवे।

भारतीय रेलवे सिर्फ परिवहन का साधन ही नहीं है यह देश की धड़कन और प्राणवायु है। कहा जाता है कि अंग्रजों ने भारत में यूपीएससी के बाद जो सबसे महत्पूर्ण संस्थान बनाया वह थी भारतीय रेलवे, जिसने कि भारत के विकास में सबसे अग्रणीय भूमिका निभायी है।

## भारतीय रेलवे का इतिहास

भारतीय रेलवे की शुरुआत 16 अप्रैल 1853 ई. को हुई थी। जब पहली रेलगाड़ी ठाणे से मुंबई 34 किमी की दूरी तय की थी। यह तीन इंजनों; साहिब, सुलतान और सिंध की मदद से 14 डिब्बों में लगभग 400 यात्रियों ने यह सफर तय किया था।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात रेलवे का राष्ट्रीयकरण किया गया तथा वर्ष 1952 में इसे समग्र रूप से भारतीय रेलवे का नाम दिया गया। आज भारतीय रेलवे विश्व की चौथी तथा एशिया की दूसरी सबसे बड़ी रेल प्रणाली है जो कि भारत के उत्तर से दक्षिण तथा पूरब से पश्चिम तक लगभग 68,000 किमी तक फैली हुई है। आज भारतीय रेलवे प्रतिदिन लगभग 10,000 से अधिक रेलगाड़ियों का परिचालन करती है, जिसमें 2.5 करोड़ यात्री प्रतिदिन अपनी यात्रा पूरी करते हैं, तथा लाखों टन माल की ढुलाई होती है।

## भारत की आर्थिक प्रगति में रेलवे की भूमिका

### 1. व्यापार तथा उद्यम को बढ़ावा

भारतीय रेलवे ने भारतीय उद्योगों तथा व्यापार को तीव्र गति प्रदान की है। कच्चे माल को फैक्ट्रियों तक पहुंचाना या फिर तैयार माल को बाजार तक पहुंचाने में रेलवे अग्रणी रही है। कृषि उत्पाद जो देश के एक कोने में उत्पादित होता है, अगले ही दिन रेलवे की सहायता से देश के दूसरे कोनें में आसानी से उपलब्ध हो जाता है। रेलवे माल यातायात का सबसे सस्ता तथा विश्वसनीय साधन है।

### 2. रोजगार सृजन

भारतीय रेलवे देश का सबसे बड़ा नियोक्ता है। आज भारतीय रेलवे में प्रत्यक्ष रूप से 12 लाख कर्मचारी अपनी सेवाएं दे रहें हैं। भारतीय रेलवे में नौकरी पाने को भारतीय समाज में सम्मान की दृष्टि से देखा जाता है। प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी कर रहे प्रत्येक अभ्यर्थी के लिए भारतीय रेलवे में नौकरी पाना एक सपना होता है। 12 लाख प्रत्यक्ष रूप से कार्यरत कर्मचारियों के अलावा करोड़ो लोग रेलवे से जुड़ी सेवाओं जैसे, साफ-सफाई, खान-पान, कैटरिंग, टिकटिंग तथा मरम्मत के कार्यों में अपनी सेवाएं देकर रोजगार पाते हैं।

### 3. क्षेत्रीय असामानताओं को कम करना

भारतीय रेलवे के विकास में क्षेत्रीय असमानताओं को कम करने का कार्य किया है। देश भर में रेलवे के विस्तार के कारण रेलवे स्टेशनों के आस पास छोटे-बड़े शहरों का विकास हुआ है। जिससे कि ग्रामीण अर्थव्यवस्था को गति मिली है। सूदूर उत्तर-पूर्व तथा आदिवासी क्षेत्रों में रेलवे के विस्तार की वजह से इन पिछड़े क्षेत्रों को मुख्यधारा से जुड़ने का मौका मिला है तथा इन क्षेत्रों के सामाजिक, आर्थिक गतिविधियों को गति मिली है। इस प्रकार कह सकते हैं कि भारतीय रेलवे की विस्तार ने क्षेत्रीय असमानताओं को कम करने में वृहद भुमिका निभाई है।

## भारत की सामाजिक प्रगति में रेलवे की भूमिका

### 1. राष्ट्रीय एकता और समानता को बढ़ावा

भारतीय रेलवे जो कि देश के हर कोनें में फैला हुआ है, इसमें धर्म, जाति, क्षेत्रीय आदि की दूरियों या विविधताओं को पाटने का काम किया है। अपनी यात्रा के दौरान लोग अलग-अलग भाषा, संस्कृति, जन-जीवन, विचार आदि के लोगों से मिलते हैं और सांस्कृतिक तथा वैचारिक आदान-प्रदान करते हैं। अपनी यात्रा के दौरान रेलवे लोगों को एक-दूसरे को जानने का मौका देती है। इस प्रकार यह कह सकते हैं कि भारतीय रेलवे ने राष्ट्रीय एकता और समरसता को बढ़वा दिया है।

### 2. शिक्षा और स्वास्थ्य की पहुंच

रेलवे के विस्तार ने शिक्षा और स्वास्थ्य सुविधाओं को ग्रामीण भारत तक पहुंचा दिया है। आज रेलवे की सहायता से छात्र, शिक्षक, डॉक्टर या फिर मरीज, बेहतर शिक्षण संस्थान या अस्पतालों तक अपनी पहुंच सुनिश्चित करके गुणवत्तापूर्वक शिक्षा और स्वास्थ्य सुविधाओं का लाभ ले सकते हैं।

### 3. पर्यटन को बढ़ावा

भारतीय रेलवे देश के धार्मिक-ऐतिहासिक तथा प्राकृतिक स्थानों तक पहुंच प्रदान करती है। भारतीय रेलवे रामायण सर्किट पैलेस ऑन व्हील्स, डेक्कन ओडिसी, गोल्डन चेरियट आदि ट्रेनों का परिचालन करके भारतीय पर्यटन उद्योग में अप्रतिम योगदान दिया है।

### 4. आपदा प्रबंधन और राष्ट्रीय सुरक्षा

कोविड-19 महामारी को दौरान रेलवे ने श्रमिक स्पेशल ट्रेनों का परिचालन करके करोड़ों लोगों को उनके घर तक सुरक्षित पहुंचाया है। रेलवे कोचों को आइजोलेशन वार्ड में बदलकर रेलवे ने मानवता की सेवा का अप्रतिम उदाहरण दिया है। प्राकृतिक आपदा जैसे कि बाढ़, भूकंप, भूस्खलन आदि के समय रेलवे ने राहत सामग्री तथा रेस्क्यु को सुनिश्चित किया है। युद्ध या अशांति के समय भी सेना के परिवहन के लिए रेलवे हमेशा भारतीय सेना के साथ कंधे से कंधा मिलाकर खड़ी रही है।

### 5. महिला सुरक्षा और सशक्तिकरण

भारतीय रेलवे ने 'मेरी सहेली' महिला आरक्षण, महिला कोच, महिला स्टाफ भर्ती आदि कदम उठाकर महिला सुरक्षा तथा सशक्तिकरण को सुनिश्चित किया है।

### 6. भारतीय सिनेमा पर रेलवे का प्रभाव

भारतीय रेलवे भारतीय सिनेमा का अहम हिस्सा रही है। भारतीय रेलवे का प्रभाव भारतीय सिनेमा उद्योग पर हमेशा से रहा है। फिर चाहे वो पाथेर पांचाली का आईकॉनिक दृश्य या शोले की ट्रेन सिक्वेंश या 'दिल से' फिल्म का चल छैयां-छैयां गीत।

## तकनीक तथा संरचनात्मक प्रगति में रेलवे का योगदान

### 1. विद्युतीकरण और पर्यावरण संरक्षण

भारतीय रेलवे ने डीजल इंजनों की तेजी से कमी करते हुए विद्युतीकरण को बढ़ावा दिया है। भारतीय रेलवे का लक्ष्य वर्ष 2030 तक नेट जीरोकार्बन एमिशन रेलवे बनाना है। इस पहल से कार्बन उत्सर्जन में कमी आएगी और पर्यावरण संरक्षण में सहायता होगी।

### 2. डिजिटलीकरण

भारतीय रेलवे ने डिजिटलीकरण को अपनाया है, जिसमें कि ऑनलाईन एप्स तथा इंटरनेट की सहायता से ऑनलाईन टिकिट, कैटरिंग, आईआरसीटीसी, यूटीएस आदि की सहायता से यात्रियों को सुविधाएं मुहैया कराई जाती है, जिससे कि यात्रियों को बहुत सुविधा हुई है।

### 3. वंदे भारत तथा बुलेट ट्रेन

भारतीय रेलवे ने 'मेक इन इंडिया' के तहत सेमी हाई स्पीड ट्रेन वंदे भारत का परिचालन किया है। मुंबई से अहमदाबाद बुलेट ट्रेन कॉरिडोर की शुरुआत के साथ ही भारत हाई स्पीड ट्रेन के युग में शामिल हो जाएगा।

### 4. डेडीकेटेड फ्रेट कॉरिडोर

यह रेलवे की महत्वाकांक्षी योजना है, जिसमें मालगाड़ियों के लिए एक अलग लाइन बनाने का योजना है, जिससे कि यात्री ट्रेनों को बाधा पहंचाए बिना माल ढुलाई को तेज किया जा सके।

### 5. स्टेशन पुनर्निर्माण योजना

भारतीय रेलवे देश के सभी बड़े रेलवे स्टेशनों को एयरपोर्ट पर मिलने वाली सुविधाओं के तर्ज पर विकसित कर रही है। हमारे दक्षिण पश्चिम रेलवे निर्माण संगठन के अंतर्गत यशवंतपुर तथा बैंगलौर कैंट रेलवे स्टेशन पुनर्निर्माण का कार्य तेजी से चल रहा है।

## परेशानियां और निष्कर्ष

### परेशानियां

1. लेट लतीफी 2. स्वच्छता
3. अत्यधिक भीड़ 4. टिकटों की अनउपलब्धता
5. तकनीक की कमी 6. दुर्घटनाएं
7. आर्थिक घाटा

### निष्कर्ष

1. तकनीकीकरण 2. निवेश को बढ़ावा
3. प्रशिक्षण तथा सेफ्टी पर ध्यान
4. PPP मॉडल को अपनाना
5. स्वच्छता को बढ़ावा देना

## उपसंहार

जब कभी भी भारतीय विकास की चर्चा होगी इससे भारतीय रेलवे को नजरअंदाज करके पूरा नहीं किया जा सकेगा। भारतीय रेलवे भारत की धड़कन, अर्थव्यवस्था की रीढ़ तथा राष्ट्रीय एकता का आधार स्तंभ है। यह केवल परिवहन का साधन ही नहीं देश की प्राणवायु भी है। जैसे- जैसे भारत विश्व शक्ति बनने की ओर अग्रसर है, भारतीय रेलवे का योगदान और अधिक महत्वपूर्ण होती जाएगी। जरूरत है कि रेलव को तकनीकी, आर्थिक तथा प्रबंधकीय रूप से सशक्त किया जाए, जिससे कि भारतीय रेलवे भारत की प्रगति का आधार स्तंभ बने।

# मां का अधूरापन

गजाला अ. करीम देसाई
कनिष्ठ लिपिक सह टंकक, राजभाषा विभाग
प्रधान कार्यालय, दपरे

एक दिन मैं अपने घर से निकल ही रही थी कि तभी एक उम्रदराज़ महिला मेरे सामने आई और रोने लगी। मुझे कुछ देर तक कुछ समझ नहीं आया कि यह कौन है, क्या चाहती है और क्यों रो रही है। कुछ ही पलों में मैंने खुद को संभाला और उस महिला को एक कुर्सी पर बैठाकर पानी दिया। वह महिला बहुत रो रही थी, मैंने उन्हें चुप कराने की बहुत कोशिश की, पर वह चुप नहीं हो रही थी। काफ़ी देर रोने के बाद वह थोड़ी शांत हुई, तो मैंने पूछा, 'अम्माँ जी, आप कौन हैं और क्यों रो रहे हैं? कहां से आए हैं?' मेरे सवाल सुनकर अम्माँ फिर से रोने लगीं, लेकिन थोड़ी देर में शांत हो गई।

चुप होने के बाद अम्माँ कहने लगीं, 'मेरा नाम वंदना है, मैं बिहार के एक छोटे से गांव से हूँ।' मैंने बीच में ही पूछा, 'तो आप यहां क्यों आई हैं और रो क्यों रही हैं?' अम्माँ थोड़ी देर मेरी तरफ़ देखती रहीं, फिर पानी पीकर बोलीं, 'मैं आई नहीं हूँ बेटा, मुझे मालूम ही नहीं कि मैं यहां कैसे आई।' इतना बोलकर अम्माँ फिर रोने लगीं। मैंने अम्माँ को चुप कराया और कुछ खाने को देकर फिर पूछा, 'क्या बात है? मुझे बताइए, परेशान मत होइए।' अम्माँ किसी अच्छे घर से लग रही थीं। उन्होंने लाल रेशमी साड़ी पहनी थी, माथे पर लाल बिंदी थी, गोरा रंग था, हाथों में चूड़ियां और पैरों में अच्छे चप्पल थे। उनके हाथ में किसी बड़ी कंपनी का पर्स भी था। मैंने कहा, 'अम्माँ, मुझे बताइए क्या बात है, मैं आपकी क्या मदद कर सकती हूँ?' यह बात सुनकर अम्माँ ने रोना बंद किया और एक आस से मुझे देखने लगीं। मैंने फिर पूछा, 'अम्माँ, क्या बात है, कृपया कुछ तो बोलिए।' तब अम्माँ ने अपने आंसू पोंछे और बताने लगीं।

'मेरा बचपन बहुत अमीरी में बीता। पिता ज़मींदार थे। हम दो भाई-बहन हैं। हमारी पढ़ाई इंग्लैंड में हुई थी। भाई ने वहीं एक लड़की से शादी कर ली। माता-पिता भी राज़ी हो गए। माता-पिता के जीवित रहने तक भाई इंडिया आता-जाता रहा। माता-पिता के देहांत के बाद सालों में कभी कभार आता है। मेरी शादी भी पिता ने एक रईस ज़मींदार के घर करवा दी। दीपक, मेरे पति, बहुत समझदार थे और 50 गांवों के ज़मींदार थे। शादी के दो साल बाद आकाश का जन्म हुआ। हम बहुत खुश थे। ज़िंदगी खुशी से चल रही थी, तभी राहुल का जन्म हुआ। दोनों बच्चों के साथ हम खुशी-खुशी अपनी ज़िंदगी जी रहे थे। पता ही नहीं चला कि बच्चे कब बड़े हो गए। आकाश और राहुल ने अमेरिका से अपनी पढ़ाई पूरी की थी, और दोनों की शादी भी अमेरिका में ही रहने वाली जूली और सुनीता से हो गई। सब कुछ ठीक ही चल रहा था, एक दिन अचानक दिल का दौरा पड़ने से दीपक की मौत हो गई। उसकी मौत पर ऐसा लगा - जैसे मेरी तो दुनिया ही लुट गई।

जैसे-तैसे एक साल गुज़र गया। अब तो दोनों बच्चे भी अमेरिका जाना चाहते थे, वहीं जाकर बसना चाहते थे। मैंने मना किया कि यह अपनी ज़मीन है, हम यहां के ज़मींदार हैं, पर बेटे नहीं माने और मुझे बिना बताए ही पूरी ज़मीन-जायदाद बेच दी। अपनी पत्नियों को अमेरिका भेज दिया और कुछ दिनों बाद मेरा मकान भी बेच दिया, मुझे बताया भी नहीं। एक महीना गुज़र गया। अब बेटे बात करने लगे कि हम अमेरिका जाकर अपनी पत्नियों को ले आते हैं, तब तक मां आप भी तीर्थयात्रा कर लो, हम आपका टिकट कर देते हैं। मैं भी मान ली कि अकेले घर में क्या करना, तीर्थयात्रा पर जाकर आती हूँ। और मैं चल दी। मेरे घर से जाने के बाद ही दोनों बेटों ने मकान मालिक को मकान का कब्ज़ा देकर अमेरिका चले गए। जब एक महीने के बाद मैं लौटी, तो देखा कि मकान में तो कोई और ही है। मैंने सोचा कि कोई परिजन आए होंगें। मैं मकान में जाने लगी तो मुझे दरबान ने रोका और बोला, 'अम्माँ, यह मकान अब आपका नहीं है। आपके बेटों ने यह मकान हमारे मालिक को बेच दिया है और आपके नाम यह पत्र दिया है।' मैं वो पत्र लेकर देखी तो मेरे पैरों तले ज़मीन खिसक गई। पत्र में लिखा था कि 'माँ, हम यह देश छोड़कर हमेशा के लिए अमेरिका जा रहे हैं और हमने पूरी ज़मीन-जायदाद भी बेच दी है। आपसे इतना सब कुछ संभाला भी नहीं जाता, इसलिए सब कुछ बेच दिया है और आपके लिए एक कमरा किराए पर लिया है। आप वहां आराम से रहना। पैसे हम देते रहेंगें, आपको कोई दिक्कत नहीं होगी। आप हमारी बात को समझ रही हैं ना मां ? हम आपसे मिलने आते ही रहेंगें।'

मैं कांपते पैरों के साथ उस कमरे की ओर गई। जाकर देखा तो वह कमरा 8 x 10 का था। मुझे दीपक की बहुत याद आने लगी। वह हमेशा कहते थे कि हमारे बच्चे बहुत अच्छे हैं, पर अब यह सब देखने के लिए दीपक तो नहीं थे। मैंने भी बच्चों की खुशी के लिए राज़ी हो गई इस कमरे में रहने को। दो महीने तक बेटों ने पैसे दिए, बाद में उनके पैसे भी आने बंद हो गए। दो-तीन महीने की प्रतीक्षा के बाद वह कमरा भी खाली करना पड़ा। अब तुम बोलो बेटी, मैं रोऊं नहीं तो क्या करूं, इतना सुनकर मेरी भी आँखे भर आई।

मुझे यह सुनकर बहुत दुख हुआ कि अम्माँ अपनों से ही सताई हुई हैं। यह बहुत मुश्किल स्थिति है, खासकर जब आपने ही बच्चे, जिन्हें ,अम्माँ ने इतने प्यार से पाला-पोसा, वही उन्हें दुख दे रहे हैं। कुछ समय तक मुझे भी समझ ही नहीं आया कि

अब अम्माँ को क्या जवाब दूं, अम्माँ मुझे एक आस से देख रही थी, मैंने धीरे से अम्माँ से कहा, देखो अम्माँ जी जो हुआ अच्छा नही हुआ, पर अब सोचना यह है कि हमें करना क्या है। अम्माँ जी आप बोलो की अब आपकी क्या इच्छा है ? क्या आप आपने बच्चों को माफ कर यहाँ हमारी संस्था में इन सब के साथ रहेंगें या आपने कुछ और भी सोचा है। मुझे यह सुनकर बहुत दुख हुआ कि अम्माँ अपनों से ही सताई हुई हैं। यह वाकई एक मुश्किल स्थिति है, खासकर जब अपने ही बच्चे, जिन्हें अम्माँ ने इतने प्यार से पाला-पोसा, वही उन्हें दुख दे रहे हैं।

कुछ पल के लिए मुझे भी समझ नहीं आया कि अम्माँ को क्या जवाब दूं। अम्माँ मुझे एकटक देख रही थीं। मैंने धीरे से अम्माँ से कहा, 'देखिए अम्माँ जी, जो हुआ वह अच्छा नहीं हुआ। पर अब हमें यह सोचना है कि आगे क्या करना है। अम्माँ जी, आप बताइए कि आपकी क्या इच्छा है। आप अपने बच्चों को माफ करके यहीं हमारी संस्था में इन सबके साथ रहेंगें, या आपने कुछ और भी सोचा है?' फिर अम्माँ जी रोने लगी और थोड़ी देर बाद चुप हो गई और कहने लगी "ज़िंदगी की उदास राहों में, रंज-ओ ग़म के मेले हैं, भीड़ है क़यामत की, और हम अकेले हैं। आईने के सौ टुकड़े करके हमने देखे हैं, एक में भी तन्हा थे, और सौ में भी अकेले हैं।" मैं चौंक गई, तब अम्माँ ने कहा कि शायरी मेरा शौक था एक ज़माने में। मैं बहुत लिखती थी। दीपक के जाने के बाद, सब कुछ बदल गया। अम्माँ उदास हो गई, अपने पति को याद करके। मैंने अम्माँ जी से कहा, 'अब आपको उदास होने की ज़रूरत नहीं है अम्माँ जी। मुझे भी शायरी का शौक आज भी है।' अम्माँ जी, क्या आप यहीं रहेंगी, हमारे साथ ही ? अम्माँ जी के चेहरे पर भी थोड़ी मुस्कुराहट आई और उन्होंने भी हाँ कर दी।

# मन की मुंडेर पर

ओ पी सिंह
संरक्षा सलाहकार, यातायात संरक्षा विभाग
प्रधान कार्यालय, दपरे


जीवन में आयेंगे संघर्ष, लग जाये भले देर पर।
बैठा है एक ख्वाब मेरे मन कि मुंडेर पर ।।

ख्वाब बहुत ये अच्छा है,
मेरे मन का सच्चा है ।
गुजर न जाये रात कहीं ये,
बिगड़ न जाये बात कहीं ये।
कोई हलचल न हो जाए,
न बैठा पंछी उड़ जाए।
आज इसे गर पालूँगा,
तो जीवन सफल बना लूँगा।
मेरा अंतिम लक्ष्य यही है,
मेरे जीवन का साक्ष्य यही है।
ख्वाबों कि नगरी में ऐसा,
ख्वाब न देखा तेरे जैसा ।
मेरे तन का सार यही है,
जीवन का आधार यही है ।
संघर्ष व्यर्थ हो जायेगा,
ये मन घुटकर मर जायेगा ।।

बैठ न जाये जाके ये कहीं और बेर पर।
बैठा है एक ख्वाब मेरे मन कि मुंडेर पर ।।

देखे कई ख्वाब सुनहरे से,
कोई गूंगे थे कोई बहरे से।
तुझ में सब ख्वाब देखीं हैं,
बाकी सब अनदेखीं हैं।

ये सच है कोई भ्रम नहीं है,
मेरा कोई और श्रम नहीं है ।
एक तेरी ही अभिलाषा है,
मेरे जीवन की आशा है ।।
तू पक्षी कितना सुंदर है,
मेरे दिल के अन्दर है ।
चाँदी सा बदन तेरा,
आकार में जैसे समंदर है।।
राम करे सब पूरे हों,
ख्वाब न किसी के अधूरे हों ।
मेहनत सम्भव सब हो जाये,
मंजिल सबको मिल जाये।
तेरा साथ मिले जो, तो क्यों जायें सैर पर।
बैठा है एक ख्वाब मेरे मन कि मुंडेर पर ।।

## अखिल रेल हिंदी नाट्योत्सव में हुब्बल्लि कारखाना को द्वितीय पुरस्कार

## साइक्लोथान

## डिजिटल रेडियोग्राफी का उद्घाटन

## प्रमुख विभागाध्यक्षों का विदाई समारोह

## क्षेत्रीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 81वीं बैठक

## हिंदी गृह पत्रिका “अभिव्यक्ति” के 54 वें अंक का विमोचन

## नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 77वीं बैठक

## सुमित्रानंदन पंत जयंती–प्रधान कार्यालय